मधुबन ओम् शान्ति अंक 305 दिसम्बर 2017

पत्र-पुष्प

निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र
(11-11-17)

प्राणप्यारे अव्यक्त मूर्त मात-पिता बापदादा के अति लाडले, सदा अन्तर्मुखी बन, मन और मुख के मौन द्वारा शान्ति और सुख के सागर में समाने वाले, परमात्म लगन में मगन रहने वाले सर्व निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सभी ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - वर्तमान समय मीठे बाबा के बेहद घर में बाबा के अनेकानेक नये पुराने बच्चों की रिमझिम लगी हुई है। सभी बड़े प्यार से बाबा की वरदान भूमि में आकर स्वयं को सर्वशक्तियों, सर्व वरदानों से भरपूर कर खुशियों में नाचते, उड़ती कला में उड़ने लगते हैं। यह भी जादूगर बाबा की जादूगरी कहें कि अव्यक्त वतन से भी अपने स्नेही बच्चों को कितने अच्छे-अच्छे अनुभवों से भरपूर कर देता है। रिवाइज कोर्स की साकार वा अव्यक्त मुरलियों द्वारा भी कितनी अच्छी पालना मिल रही है।

हम सबने तो अपनी दिल दिलाराम को दे दी है। गुणदाता, वरदाता बाबा के बच्चे हैं, वह हमको ''समान भव'' का वरदान देके कहता है बच्चे तुम भी वरदान देते रहो, खुश रहो, आबाद रहो न विसरो न याद रहो। कोई भी कार्य जल्दबाजी में नहीं करो तो अच्छा होगा यानी धीरज धर मनुआ। मन को धीरज देना माना समझदार बनना। बुद्धि का कोई अभिमान नहीं, बाबा हर बच्चे से अच्छे से अच्छा कार्य करा रहा है। बाबा कहता है तुम साक्षी हो करके देखो। मुझे बड़ा अच्छा लगता है बाबा को बनाओ साथी और खुद बन जाओ साक्षी। यह भी हमारा सौभाग्य है जो साक्षी हो करके पार्ट बजाते, बहुत अच्छा शान्त रहने, सहयोगी बनने का चांस मिला है। कैसे सहजयोग, राजयोग से राजाई पद मिलता है, उसका प्रैक्टिकल अनुभव हो रहा है।

मेरे अन्दर की यही भावना और भाव है कि कोई भी कार्य सब मिलकरके (एकमत हो करके) करें तो बड़े से बड़ा कार्य सहज हो जायेगा। मीठे बाबा ने मुझे तो साक्षी हो करके, देखने और पार्ट बजाने की जो सुमत, श्रीमत दी है वो सिरमाथे पर है। कभी मनमत, परमत का प्रभाव नहीं पड़ सकता। श्रीमत बहुत शान्त, अचल-अडोल बना देती है। यह भी बाबा की कमाल है जो शुभचिंतन में रहने वा शुभचिंतक बनने से हर एक के प्रति शुभ भावना नेचुरल रहती है, इससे अपने संकल्पों की क्वालिटी भी अच्छी हो जाती है।

यह सेवायें भी हमारा भाग्य है, कराने वाला करा रहा है, जो सेवा सामने आती है खुशी से करते हैं। न कभी नाराज़ होना, न नाराज़ करना, ऐसा अपना रिकॉर्ड हो। यह रिगार्ड देने का रिकॉर्ड बहुत-बहुत रीयल और रॉयल बना देता है। शरीर तो सबके पुराने हैं, इसमें कुछ भी होता है कोई हर्जा नहीं है, इसे बाबा चला रहा है। कभी कोई भी कारण हो (समस्या हो), तो शान्ति उस कारण का निवारण कर देती है। संगम के इस थोड़े से समय में हम अपना तन मन धन सब कुछ सफल कर, गुप्त दान महापुण्य करके निश्चय बुद्धि से निश्चिंत रहते हैं। अच्छा!

अभी तो शान्तिवन, पाण्डव भवन, ज्ञान सरोवर सभी स्थानों पर देश विदेश के अनेकानेक बच्चे पहुंचे हुए हैं। सब बाबा के स्नेह और सकाश का अनुभव करके भरपूर हो रहे हैं।

अच्छा - सबको याद...

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के.जानकी

ये अव्यक्त इशारे

"अपनी दृष्टि वृत्ति द्वारा रुहानी पर्सनैलिटी और रॉयल्टी का अनुभव कराओ"

1) आजकल दो प्रकार की पर्सनैलिटी गाई जाती है – एक शारीरिक पर्सनैलिटी, दूसरी पोजीशन की पर्सनैलिटी। ब्राह्मण जीवन में जिस ब्राह्मण आत्मा में सन्तुष्टता की महानता है – उनकी सूरत में, उनके चेहरे में भी सन्तुष्टता और श्रेष्ठ स्थिति के पोजीशन की पर्सनैलिटी दिखाई देती है।

2) जिनके नयन-चैन में, चेहरे में, चलन में सन्तुष्टता की पर्सनैलिटी दिखाई देती है वही तपस्वी है। उनका चित्त सदा प्रसन्न होगा, दिल-दिमाग सदा आराम में, सुख-चैन की स्थिति में होगा, कभी बेचैन नहीं होंगे। वे अपने हर बोल और कर्म से, अपनी दृष्टि और वृत्ति से रूहानी पर्सनैलिटी और रॉयल्टी का अनुभव करायेंगे।

3) आप ब्राह्मणों जैसी रूहानी पर्सनैलिटी सारे कल्प में और किसी की भी नहीं है क्योंकि आप सबकी पर्सनैलिटी बनाने वाला ऊंचे ते ऊंचा स्वयं परम आत्मा है। आपकी सबसे बड़े ते बड़ी पर्सनैलिटी है - **स्वप्न वा संकल्प में भी सम्पूर्ण प्युरिटी**। इस प्युरिटी के साथ-साथ चेहरे और चलन में रूहानियत की भी पर्सनैलिटी है - अपनी इस पर्सनैलिटी में सदा स्थित रहो तो सेवा स्वत: होगी।

4) कोई कैसी भी परेशान, अशान्त आत्मा हो आपकी रूहानी पर्सनैलिटी की झलक, प्रसन्नता की नज़र उन्हें प्रसन्न कर देगी। नज़र से निहाल हो जायेंगे। अभी समय की समीपता के अनुसार नज़र से निहाल करने की सेवा करने का समय है। आपकी एक नज़र से वह प्रसन्नचित हो जायेंगे, दिल की आश पूर्ण हो जायेगी।

5) जैसे ब्रह्मा बाप के सूरत वा सीरत की पर्सनैलिटी थी तब आप सब आकर्षित हुए, ऐसे फालो फादर करो। सर्व प्राप्तियों की लिस्ट बुद्धि में इमर्ज रखो तो चेहरे और चलन में प्रसन्नता की पर्सनैलिटी दिखाई देगी और यह पर्सनैलिटी हर एक को आकर्षित करेगी।

6) रूहानी पर्सनैलिटी द्वारा सेवा करने के लिए अपनी मूड सदा चियरफुल और केयरफुल रखो। मूड बदलनी नहीं चाहिए। कारण कुछ भी हो, उस कारण का निवारण करो। सदा प्रसन्नता की पर्सनैलिटी में रहो। प्रसन्नचित्त रहने से बहुत अच्छे अनुभव करेंगे। प्रसन्नचित आत्मा के संग में रहना, उनसे बात करना, बैठना सबको अच्छा लगता है। तो लक्ष्य रखो कि प्रश्नचित्त नहीं, प्रसन्नचित्त रहना है।

7) आप बच्चे बाहर के रूप में भल साधारण पर्सनैलिटी वाले हो लेकिन रुहानी पर्सनैलिटी में सबसे नम्बरवन हो। आपके चेहरे पर, चलन में प्योरिटी की पर्सनैलिटी है। जितना-जितना जो प्योर है उतनी उनकी पर्सनैलिटी न सिर्फ दिखाई देती है लेकिन अनुभव होती है और वह पर्सनैलिटी ही सेवा करती है।

8) जो ऊंची पर्सनैलिटी वाले होते हैं उसकी कहाँ भी, किसी में भी आंख नहीं जाती क्योंकि वह सर्व प्राप्तियों से सम्पन्न हैं। वे कभी अपने प्राप्तियों के भण्डार में कोई अप्राप्ति अनुभव नहीं करते। वह सदा मन से भरपूर होने के कारण सन्तुष्ट रहते हैं, ऐसी सन्तुष्ट आत्मा ही दूसरों को सन्तुष्ट कर सकती है।

9) जितनी पवित्रता है उतनी ब्राह्मण जीवन की पर्सनैलिटी है, अगर पवित्रता कम तो पर्सनैलिटी कम। ये प्योरिटी की पर्सनैलिटी सेवा में भी सहज सफलता दिलाती है। लेकिन यदि एक विकार भी अंश-मात्र है तो दूसरे साथी भी उसके साथ जरूर होंगे। जैसे पवित्रता का सुख-शान्ति से गहरा सम्बन्ध है, ऐसे अपवित्रता का भी पांच विकारों से गहरा सम्बन्ध है इसलिए कोई भी विकार का अंश-मात्र न रहे तब कहेंगे पवित्रता की पर्सनैलिटी द्वारा सेवा करने वाले।

10) विशेष आत्माओं वा महान आत्माओं को देश की वा विश्व की पर्सनैलिटीज़ कहते हैं। पवित्रता की पर्सनैलिटी अर्थात् हर कर्म में महानता और विशेषता। रूहानी पर्सनैलिटी वाली आत्मायें अपनी इनर्जी, समय, संकल्प वेस्ट नहीं गँवाते, सफल करते हैं। ऐसी पर्सनैलिटी वाले कभी भी छोटी-छोटी बातों में अपने मन-बुद्धि को बिज़ी नहीं रखते हैं।

11) रूहानी पर्सनैलिटी वाली विशेष आत्माओं की दृष्टि, वृत्ति, बोल.. सबमें अलौकिकता होगी, साधारणता नहीं। साधारण कार्य करते भी शक्तिशाली, कर्मयोगी स्थिति का अनुभव करायेंगे। जैसे ब्रह्मा बाप को देखा–चाहे बच्चों के साथ सब्जी भी काटते रहे, खेल करते रहे लेकिन पर्सनैलिटी सदा आकर्षित करती रही। तो फालो फादर।

12) ब्राह्मण जीवन की पर्सनैलिटी 'प्रसन्नता' है। इस पर्सनैलिटी को अनुभव में लाओ और औरों को भी अनुभवी बनाओ। सदा शुभ-चिन्तन से सम्पन्न रहो, शुभ-चिन्तक बन सर्व को स्नेही, सहयोगी बनाओ। शुभ-चिन्तक आत्मा ही सदा प्रसन्नता की पर्सनैलिटी में रह विश्व के आगे विशेष पर्सनैलिटी वाली बन सकती है।

13) आजकल पर्सनैलिटी वाली आत्मायें सिर्फ नामीग्रामी बनती हैं अर्थात् नाम बुलन्द होता है लेकिन आप रूहानी पसनैलिटी वाले सिर्फ नामीग्रामी अर्थात् गायन-योग्य नहीं लेकिन गायन-योग्य के साथ पूजनीय योग्य भी बनते हो। कितने भी बड़े धर्म-क्षेत्र में, राज्य-क्षेत्र में, साइंस के क्षेत्र में पर्सनैलिटी वाले प्रसिद्ध हुए हैं लेकिन आप रूहानी पर्सनैलिटी समान 63 जन्म पूज्यनीय नहीं बने हैं।

14) आप आत्मायें अनादि रूप में बाप के साथ अपने देश में विशेष आत्मायें हो। जैसे आकाश में विशेष सितारे चमकते हैं ऐसे आप अनादि रूप में विशेष सितारा चमकते हो। तो अपने अनादि काल की रॉयल्टी, सतयुग में फिर देवता रूप की रॉयल्टी, द्वापर में फिर आपके चित्रों की पूजा कितनी रॉयल है। आपके चित्रों द्वारा भी कितनी दुआयें लेते हैं। तो यह सब रॉयल्टी पवित्रता की है। पवित्रता आपके ब्राह्मण जीवन का जन्म सिद्ध अधिकार है।

15) दुनिया में कोई कितनी भी अथॉरिटी वाला हो लेकिन आपके गुणों की पर्सनैलिटी, रूहानियत की पर्सनैलिटी, सर्व-शक्तियों की पर्सनैलिटी के सामने सब झुक जायेंगे। अपना प्रभाव नहीं डाल सकेंगे। जैसे ब्रह्मा बाप को देखा सबके मुख से वृत्ति की पावर का वर्णन होता था। वृत्ति और वाणी की अथॉरिटी का प्रत्यक्ष सबूत देखा, तो फालो फादर।

16) आप विशेष निमित्त बने हुए सेवाधारियों की वर्तमान समय सेवा में पर्सनैलिटी चाहिए। प्यूरिटी ही आपकी पर्सनैलिटी है। जितनी-जितनी प्युरिटी होगी तो प्युरिटी की पर्सनैलिटी स्वयं ही सर्व के सिर झुकायेगी। तो वर्तमान समय प्युरिटी की पर्सनैलिटी पर विशेष अन्डरलाइन करो।

शिवबाबा याद है ? *ओम् शान्ति* 19-02-14 *मधुबन*

"विशेषता देखने की आदत डाल लो तो समय व्यर्थ नहीं जायेगा, संगम का यह समय व्यर्थ गंवाना माना अपने जीवन की वैल्यु को खत्म करना" (दादी जानकी)

आप कहेंगे हम शान्ति में बैठे थे फिर तीन बारी ओम् शान्ति क्यों कहलवाती हो? याद में बैठे हो ना, परन्तु दिन भर में मैं अपने आपको देखती हूँ, एक ओम् शान्ति मैं कौन हूँ? शान्त हो जाती हूँ। दूसरा ओम् शान्ति किसकी हूँ? शक्ति आ जाती है। और तीसरी ओम् शान्ति से सब भाई-बहनों को देख हर्षित हो जाती हूँ। शान्ति, शक्ति और हर्षित क्योंकि समय को कैसे सफल करना है यह परमात्मा बाप ने सिखाया है। मुझे लोगों को देख तरस पड़ता है, समय कैसे गँवाते हैं। सारा दिन परचिंतन यह कैसा है, वह कैसा है और वही पुराना चिंतन... शान्ति से बैठके कभी सोल-कॉन्सेस रहें वो सोल-कॉन्सेस रहने का लक्ष्य नहीं है।

हमारी यह जो लाइफ है ना, बहुत वैल्युबूल है। शान्त रहने से कभी भी कोई ख्याल ऐसा नहीं होता है जो हम निराश हो जायें। निराश होना अपने से या किसी से, यह भी एक बीमारी है। बीमारी है तो दवाई भी है। मैं नहीं कर सकती हूँ, यह किसने कहा? इसकी दवाई है हिम्मते बच्चे मददे बाप। दूसरी दवाई है सच्ची दिल से साहब राज़ी। मदद करता है बहुत, सच्ची दिल है तो। समय कहता है अभी तुम बदलेंगे तो जग बदलेगा। क्या बदलें? लाइफ में अगर प्रैक्टिकली पॉजिटीविटी है तो निराश नहीं हो सकते हैं। समय है बदलने का। और शुरू में इन आंखों से देखा है पहले हम बहुत थोड़े बी.के. बहन भाई थे, अभी 78 वर्ष हुए हैं, 60-62 वर्ष हुए हैं भारत की सेवा को, इतने में हजारों लाखों बहन भाई बी.के. हो गये हैं। 40 साल हुआ विदेश सेवा को, कईयों की जीवन लाखों की हो गई है यानि खुश है।

लाइफ में तन, मन, धन, जन यह चार बातें होती हैं। पहले मन से पूछें तन ठीक है? फिर मन अगर भटक रहा है तो तन भी बीमार हो जाता है। अगर धन है तो फालतू खर्च करता है, नहीं है तो परेशान होता है। क्या करें? है तो सफल करो। कभी ख्याल नहीं आया होगा, कल हम कहाँ से खायेंगी। इस तन से सेवा करना, मन को फ्री रखना और मन से भगवान की याद में रहना तो धन भी सफल हो जाता है। सेवा करो खाना मिलेगा। साफ दिल से भगवान को राज़ी किया ना तो भगवान बड़ा साथ देता है इसलिए हमेशा मैं कहती हूँ भगवान मेरे से खुश हो। मुझे कोई खुश करे तो मैं खुश रहूँ, नहीं। भगवान खुश तो हम आप सब खुश। सच्ची दिल है, साफ दिल है, हमारी लाइफ डायमण्ड जैसी हो। जीवन में अगर धारणायें नहीं हैं, धारणायें माना सच्चाई, प्रेम, विश्वास नहीं है तो जीवन की वैल्यु नहीं रहती है। स्वमान में नहीं रह सकते हैं, जो स्वमान में नहीं रहता है वो औरों को सम्मान नहीं दे सकता है।

मेरे में तो झूठ का अंश न हो, पर औरों का भी पूरी दुनिया के अन्दर का भी झूठ खत्म हो जाये, यह विश्वास है क्योंकि प्रेम है ना आपस में। प्रेम पिघला देता है, भगवान के प्रेम ने ही हमारी सारी लाइफ को वैल्युएबुल बना दिया। वर्च्यूज़ (गुणों) को धारण करो तो वैल्युज़ हो। लाइफ में सच्चाई, नम्रता है तो वैल्यु है। दूसरों को भी साथ, सहयोग दे करके वैल्युबूल जीवन बनानी है। अन्दर में कोई बात नहीं रखो, सदा मुस्कुराओ। अकेले बैठे हो तो भी किसके साथ बैठे हो, यह याद हो तो मुस्कुराना मुश्किल

नहीं है। और कोई बात मुश्किल लगी ना तो मुस्कुराना मुश्किल है। बात मुश्किल नहीं है, पर बात को मुश्किल समझके मुस्कुराना छोड़ दिया। सिम्पल बात है, यह अनुभव है कि कोई बड़ी बात को भी मुस्कराके हल्का कर देंगे और कोई छोटी बात को बड़ा कर देते हैं। जिसको और कोई काम नहीं है वही छोटी बात को बड़ा कर देता है। कोई है बड़ी बात को भी कहेंगे सिम्पल बात है, छोटी बात है, धीरज रखो कुछ नहीं है। क्योंकि जहाँ बात है वहाँ बाप नहीं, जहाँ बाप है वहाँ कोई बात नहीं।

नॉलेज ऐसी मिली है हर एक का अपना पार्ट है, हरेक में अपनी विशेषता है सिर्फ विशेषता देखने की आदत डालनी है। इसके बजाए और कुछ करके समय व्यर्थ गंवाना माना अपनी जीवन की वैल्यु को भी खत्म करना। यह जो टाइम है ना बड़ा वैल्युबूल है अपने को चेंज करना। जो हम रोज़ वाणी सुनते हैं बाबा की, समझ भी देता है, शिक्षा भी देता है, सावधानी भी देता है, यह नहीं करना है। और यह देखा गया है एक परमात्मा में विश्वास, उसका बल यह जीवन का आधार है। अच्छी जीवन जीना है ना, दुआयें देना दुआयें लेना। जहाँ भी रहो सबकी दुआ है। दुआ मांगो नहीं, ऐसे कर्म करो ऐसे विचार करो शुक्रिया भगवान आपका, जो इतने अच्छे विचार करने के लिए इतनी अच्छी नॉलेज दी है।

अक्सर करके कभी कोई पूछते कि तुम्हारे में इतनी एनर्जी कहाँ से आती है! तो कहती हूँ शुरू से ही मैंने टाइम, मनी, एनर्जी को वेस्ट नहीं किया है। राइट टाइम को कभी वेस्ट नहीं किया है, मनी अगर हाथ में है तो सेवा किया होगा। मतलब अच्छे कर्म करने के लिए उमंग-उल्हास चाहिए, सुस्ती नहीं हो। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार के अलावा सुस्ती, ईर्ष्या, द्वेष भाव, अलबेलापन और बहाना बनाना यह पाँच विकार और हैं। अच्छे काम के लिए जो बहाना एक्स्क्यूज़ देता है तो यह भी विकार है। अच्छा करना है कर लो, अब कर लो। कैसे करें? क्वेश्चन नहीं है। भगवान बल देता है, करने से फल अच्छा निकलता है। दूसरों को फायदा मिलता है। जब मैं पहले दूसरों को खिलाऊ ना तब तो दूसरा भी पहले मेरे को खिलायेगा ना। सिम्पल बात है पर बुद्धि स्वच्छ, शुद्ध, शान्त, श्रेष्ठ और दृढ़ होती है तब यह काम कर सकते हैं इसलिए भगवान कहता है मुझे कुछ नहीं चाहिए, तुम बुद्धि मेरे को दे दो। गीता में भी है कि भगवान को इस साधारण बुद्धि से नहीं जाना जाता है, न इन आँखों से देखा जाता है। उसको जानने और देखने के लिए दिव्य बुद्धि और दिव्य दृष्टि चाहिए। अभी हम उसको जानते हैं, देखते हैं, बुद्धि वो देता है, बुद्धि से हम योग लगायें वो शक्ति देवे। फिर मुझे करना है तो यही करना है, उसमें अलबेलेपन में टाइम नहीं गंवाना है। यज्ञ सेवा तन से जो भी करो, बहुत अच्छा है।

बाबा कहते मन को मेरे में लगा दो तो मन से मन्मनाभव हो जायेंगे। तो मन को वहाँ लगा देने से हमारे में अच्छे गुण, अच्छी धारणायें सेवा में बड़ी यूज़फुल हैं। मेरे में धारणा न हो, गुण न हो तो मैं क्या बोलेंगी इसलिए अच्छे गुण अन्दर ही अन्दर सम्पूर्ण निर्विकारी, सर्वगुण सम्पन्न, कोई भी अवगुण न रहे, सभी गुण हों क्योंकि देवता बन रहे हैं ना, यह पढ़ाई है ही देवता बनने की, जब देवता बनेंगे तब थोड़ेही पढ़ेंगे। अभी पढ़ाई पढ़ रहे हैं। ऐसे लायक बनना है। मैं बनेगी या बन सकती हूँ? यह क्वेश्चन नहीं, मुझे बनना है। संकल्प को दृढ़ रखना है तो नो प्रॉब्लम, डोन्ट वरी। जो वरी होता है, वह हरी हरी, करी करी... ना ना। सच-सच बोलो, मीठा-मीठा बोलो, धीरे-धीरे बोलो। सभी आये हो तो ऐसे फुल हो जाना और जा रहे हो तो बाबा आपने अपना बनाके मुस्कराना सिखा दिया, यह गीत दिल में गाते जाओ, बस। ओके,

दूसरा क्लास

"अब दाता बन करके समय पर शुभ भावना का गुप्त दान करके महापुण्य जमा करो" (दादी जानकी)

ओम् शान्ति। कहाँ बैठे हो? शान्तिवन में या डायमण्ड हॉल में? कितना अच्छा वायुमण्डल है। हर एक बाबा के बच्चे एक ही धुन में हैं कि मुझे सच्चा हीरा बनना है। हीरा बनना है या हीरे का बीजनेस करना है यानि औरों को बनाना है? पहले मुझे बेदागी हीरा, ऐसा वैल्युबुल हीरा बनना है। मुझे हीरा बनना है तो पहले अन्तर्मुखी बनना है। देखो अन्दर मैं आत्मा हूँ यह तो बाबा ने परिचय दिया, पर मैं कौन-सी आत्मा हूँ। बाबा पहले त्रिनेत्री बनाता है फिर त्रिकालदर्शी, स्व-दर्शन चक्रधारी फिर त्रिलोकीनाथ। फिर क्या करना है? फिर घर जाना है। विकर्माजीत, कर्मातीत, सम्पूर्ण निर्विकारी, सर्वगुण सम्पन्न, अव्यक्त फरिश्ता बनके जाना है। बाबा साकार में कैसा था, अभी अव्यक्त हो करके दिखा रहा है, अव्यक्त हो करके साकारी भासना दे रहा है। कोई नहीं

कहेगा मैंने साकार में बाबा को नहीं देखा है, सभी मेरा बाबा कहते हैं। जब मेरा बाबा कहते हैं तो कौन नज़र आता है? सामने देखो कौन नज़र आ रहा है।

अभी चारों तरफ शिवरात्रि मना रहे हैं। हर मुरली में बाबा बताता है शिवजयंती सो गीता जयंती इसलिए शिवरात्रि कहते हैं, जयंती नहीं कहते हैं क्योंकि कलियुगी अन्धियारी रात है तो शिवबाबा ब्रह्मा के तन में प्रवेश हो ज्ञान अंजन देकर अज्ञान अन्धेर विनाश कर देते हैं। किसी को कहो तुम अज्ञानी हो तो उसे दु:ख लगेगा, पर महसूस करते हैं। कहते हैं अज्ञान अन्धेरे में भटक रहे थे, जहाँ तहाँ चारों तरफ लगाये फेरे परन्तु उनसे दूर रहे। कैसा मीठा बाबा भटकने से छुड़ाता है, किसके बच्चे हो? बहुत अच्छा लगता है, वो एक ही बाप जब ब्रह्मा तन में प्रवेश हुआ तो मेरी माँ भी है तो शिव बाप भी है। जब मुख से सुना रहा है तो शिक्षक है, सतगुरू है, श्रीमत पर चलने के लिए कितना सही रास्ता बताया है। मनमत परमत पर भटकने से छुड़ाया है, ऐसा बाप फिर मेरा सखा है। कभी भी शिक्षक को कोई सखा नहीं बना सकते हैं या सतगुरू को सखा नहीं बनाते हैं, पर हमारा बाबा इतना मीठा प्यारा है, सखा बन करके साथ दिया है, अपने जैसा दु:खहर्ता सुख-शान्ति दाता बनाया है।

बाबा का बनने से पहले क्या मिला है? शान्ति मिली है, शक्ति मिली है या खुशी मिली है? पहले क्या मिला है? अगर कहेंगे शान्ति मिली है, शान्ति भी तब आई, जब खुशी हुई है। कमजोर थी तो कहेंगे शक्ति मिली। ऐसी चिटचैट करने में मजा आता है। तो पहले क्या मिला है? शान्ति मिली, खुशी मिली, शक्ति मिली। पहले तो बाबा कितना प्यार करता है इसलिए कहेंगे पहले प्यार मिला। ऐसा मेरा बाबा है, जो माँ के रूप से मेरा बच्चा कहके गोद बिठाता है फिर गले लगाता है। अनुभव है ना! फिर हम बच्चों को ऐसी गले की माला बनाता है, जो भक्तों को माला सिमरण करना सहज हो। तो हम परमात्म गले की माला के मणकों का भगत सिमरण कर रहे हैं। ऐसा भगवान भाग्य विधाता, जिसने गोद बिठाके गले लगाया है फिर नज़र से निहाल करके नज़रों में बिठा दिया है। पहले पुकारते थे नयनहीन को राह दिखाओ प्रभु... अभी उस प्रभु ने नयन भी दिया है, तो राह भी दिखा दिया, साथ भी ले चल रहा है।

बाबा मिला तो बाबा से बहुत खज़ाना मिला। बाबा कहता है अपने खज़ाने को देखो, ज्ञान का खज़ाना, गुणों का खज़ाना, शक्ति का खज़ाना मिला है। तो अभी मन्सा से शक्ति का खज़ाना दो, वाचा से ज्ञान का खज़ाना दो और कर्मणा से गुणों का खज़ाना दो। दु:खियों का दु:ख दूर करने वाला बाबा मिला। बाबा से खज़ाना मिला, खुराक मिली, खज़ाना है तो शान है, अब दाता बन करके समय पर किसी को अन्दर में शुभ भावना का गुप्त दान करके महापुण्य जमा करो। बाबा ने दाता बन करके दिया है तो औरों को दो और दाता बन जाओ। बाबा से कभी कुछ मांगना नहीं पड़ता है, मांगने से मरना भला, जीते जी ऐसे मरे हैं तो बाबा अपने आप देता है। मुरली से ऐसा खज़ाना मिलता है जो सारा दिन मनन चिंतन सिमरण करते कलह क्लेष मिट जाते हैं। ज्ञान का सूक्ष्म मनन चिंतन करो, उसमें अच्छी अच्छी बातें ऐसी हैं जिनका सिमरण करने से बहुत सुख मिलता है। बाबा तेरा बनने से सुख मिलता इलाही है। ओम् शान्ति।

तीसरा क्लास

"समझदार वह है जो ज्ञान योग की शक्ति से विस्तार को समेट ले, समाने की शक्ति से सच्चाई और प्रेम का व्यवहार करे"

दादी जानकी

निश्चय का बल है, निश्चय में विजय है। भावना का भाड़ा है, सच्चाई में सब सहज है। बल, शक्ति और एनर्जी। कमजोरों को बल चाहिए, संसार में रहने के लिए शक्ति चाहिए। आजकल दुनिया में रहना है तो धीरज चाहिए, सहनशक्ति चाहिए। थोड़ा भी कहेंगे मैं सहन नहीं कर सकती हूँ तो फिर धीरज छूट जाता है। संगठन में रहने के लिए सन्तुष्टता की शक्ति चाहिए। ऐसे नहीं हम खुद तो सन्तुष्ट हैं लेकिन और भी हमसे सन्तुष्ट हैं! यह भी नहीं कहें कि कितनी कोशिश करते हैं, फिर भी यह सन्तुष्ट नहीं होता। तो भी कहेंगे यह मेरी कमजोरी है। चलते-फिरते व्यवहार में आते तन, मन, धन, सम्बन्ध में सन्तुष्ट। सभी के अन्दर से आवाज़ निकलें हम सब सन्तुष्ट हैं।

तो पहले ज्ञान का बल मिलता है, योग की शक्ति मिलती है फिर समेटने की शक्ति काम में आती है क्योंकि विस्तार में जाना तो बहुत सहज है। हर एक अपने आपसे पूछे धन्धा, व्यापार या जो भी अपने अपने ऑक्यूपेशन के विस्तार में होंगे, अभी उसे समेटे कैसे? ज्ञान-योग की शक्ति से समेटना सहज होगा जिससे हल्के रहेंगे। आज नहीं तो कल कभी भी यह आत्मा शरीर छोड़े, बुद्धि में कुछ भी फैला हुआ न हो, यह है, यह है..... समेट लो। फिर है समाने की शक्ति, जैसे कुछ हुआ ही नहीं। समाने की शक्ति इतना सयाना, समझदार बनाती

है। बुद्धि से अगर अपने को समझदार समझेंगे तो बुद्धि अभिमान दिखायेगी, वह समा नहीं सकेंगे। समाने की शक्ति वाले कभी भी मुख से रिपीट नहीं करेंगे। समाने की शक्ति से सच्चाई और प्रेम के साथ व्यवहार करने में सहज है, कोई बात नहीं। उनको भगवान की तरफ से कहो भाग्य की तरफ से कहो परखने की शक्ति है। जैसे हंस को पता है यह मोती है, यह पत्थर है, वो किसी के संग में नहीं आयेगा, कभी किसी के प्रभाव, दबाव वा झुकाव में नहीं आयेगा। उसके बाद चाहिए निर्णय करने की शक्ति, फिर सहयोग देने की शक्ति।

दुनिया में बहुत सारी वैराइटी एज्यूकेशन यूनिवर्सिटीज़ हैं, पर इस यूनिवर्सिटी में हमें कितना बल मिला जो हमारी बुराईयां खत्म हो गई, सच तो बिठो नच। सदा खुश हैं क्योंकि कहाँ भी हैं बाबा मेरे साथ है। जब भगवान सर्वशक्तिवान मेरे साथ है तो बुद्धि बड़ी शुद्ध और शान्त रहती है। यह जो गीत है ना बाबा तेरा बनने में सुख मिलता इलाही है... जिसको यह निश्चय है उसको कोई शोक (दु:ख) नहीं है, कोई सोच नहीं है तो उसमें एनर्जी बनती है क्योंकि बल मिला, हरेक बदल जाए और मेरा साथी बने क्योंकि संग का रंग जल्दी लगता है इसलिए सत् बाप का संग मिला है। चित्त में स्मृति है, वृत्ति दृष्टि महासुखकारी है तो और क्या चाहिए! तो मैं कौन हूँ? सत्-चित्त-आनंद स्वरूप। स्मृति में सच्चाई चली गई है जिसने झूठ खत्म कर दिया है, अब संसार से भी झूठ खत्म हो जाए यह भावना है। मुझे संसार से कुछ चाहिए नहीं, जितना हमारे में परिवर्तन आयेगा, वही दुनिया के वायुमण्डल में परिवर्तन लायेगा।

सर्वशक्तिवान परमात्मा की शक्ति ने ब्रह्माबाबा को खींच लिया, फिर उनके मुख से सुनाया, फिर हमारे मुख में ब्रह्माभोजन खिलाया तो मुख से सुनाया, इन कानों से सुना, मुख में खिलाया ऐसी जीवन जीना और औरों को जीना सिखाना। हमेशा मैं कहती हूँ जीना है तो कैसे? मरना है माना शरीर छोड़ना है तो कैसे? तो जीने में मजा है, सारे कल्प में ऐसा सीखने का चांस फिर नहीं मिलेगा। भले सतयुग में कोई दु:ख नहीं होगा पर पढ़ाई और पुरुषार्थ तो अभी है ना। भावना तो अभी है ना, सिखाने वाला स्वयं भगवान अभी हमारे साथ है ना। प्रैक्टिकल सी फादर, फॉलो फादर। ब्रह्माबाबा कहता है उसको याद करो, वो कहता है इसको फॉलो करो। इज़ी है। कभी भी सारे कल्प में भगवान के मुख द्वारा यह सुनने को नहीं मिलेगा कि मुझे याद करो। रोज़ मुरली में आता है सबको भूल... यह बहुत अच्छी बात है, अभी कोई बात भुलानी नहीं पड़ती है, भूल जाती है इसलिए हर एक को अपने जीवन की वैल्यु का पता है, कोई चिंता, कोई फिकर नहीं है। ओम् शान्ति।

"मायाजीत बनना है तो बाबा के साथ का फायदा उठाओ, उसे अपना साथी और सारथी बना दो"

(गुल्जार दादी जी)

सभी अपने को कितने भाग्यवान समझते हो! क्योंकि मधुबन में आने से यहाँ के वायुमण्डल से, बाबा के मिलन और परिवार के मिलन से रूहानी नशा चढ़ जाता है। यहाँ सेवा करते योग लगाना पड़ा या लगा हुआ रहा, क्या अनुभव रहा? यहाँ योग लगाने की मेहनत नहीं करनी पड़ी और वहाँ बार-बार करनी पड़ती है क्योंकि सिवाए बाबा के और बाबा के यज्ञ की सेवा के और कोई भी जिम्मेवारी नहीं है। यज्ञ सेवा से पुण्य के खाते में बहुत पुण्य जमा हो गया है। बाहर वाले एक ब्राह्मण को खिला देते हैं तो समझते हैं हमारा बड़ा पुण्य हो गया और आपने तो कितने सच्चे ब्राह्मणों को खिलाया, कोई भी सेवा की लेकिन कितने ब्राह्मणों की सेवा की, तो उसका कितना बड़ा पुण्य बना। तो आपके पुण्य के खाते में जमा हो गया लेकिन बाबा कहते सेवा नि:स्वार्थ, निर्विकल्प हो। कोई विघ्न वाली न हो, मन में भी स्वप्न मात्र भी कोई माया का तूफान नहीं हो।

यहाँ तो कोई को कोई माया का तूफान नहीं आया होगा ना, क्योंकि यहाँ तो हर समय हर एक को बाबा याद था, बाबा साथ था, तो बाबा के आगे माया कुछ भी नहीं करेगी। इसीलिए बाबा कहते हैं यह जो यहाँ इतने दिन अभ्यास किया उसको वहाँ लगातार याद करना। कभी भी कोई भी प्रकार की माया स्वप्न में भी न आवे। सारे दिन की दिनचर्या और संकल्पों के आधार पर स्वप्न आते हैं। भले नींद में परवश हो जाते हैं लेकिन प्रभाव उसका ही होता है। इसीलिए अभी अगर किसी भी प्रकार का कोई संकल्प आवे तो फौरन मधुबन में मन के विमान से पहुँच जाना। इसका पेट्रोल है ज्ञान-योग। स्टार्ट करने का बटन है ''मेरा बाबा''। पंख है - उमंग और उत्साह, तो सबके पास ऐसा विमान है? तो जब भी कुछ होवे तो आप इस विमान में बैठके मधुबन में पहुँच जाना। मधुबन की चार दीवारों के अन्दर आ जायेंगे तो फिर वही नशा याद आयेगा जो अभी साकार में अनुभव

किया है क्योंकि मधुबन में साकार में रहे हैं, देखा है तो जल्दी याद आ जायेगा इसलिए मधुबन में आ जाना।

ऐसे टाइम पर भले और बातें भूल सकती हैं लेकिन स्टोरी बहुत जल्दी याद आती है वो नहीं भूलती है। तो अपने जीवन की कहानी को याद करो। बाबा के पास आये तो पहला-पहला नशा क्या था? वो याद करो। माया को भी अपना गुरू बनाके उससे भी गुण सीखो कि वो कभी अपना काम नहीं भूलती है। जब वो अपना काम नहीं भूलती तो हम क्यों अपना काम भूलते हैं? माया का काम है आना, हमारा काम है विजय प्राप्त करना। तो माया आती रहती है, हम क्यों भूलते हैं? सर्वशक्तिवान वो या हम? तो हम क्यों कमजोर होते हैं? इसलिए हमको माया से डरना नहीं है। हम अभुल हो करके, मायाजीत हो करके चलते चलें।

माया भी बड़ी चतुर है वो पहले अकेला करके फिर अटैक करती है, तो अकेला होते ही क्यों हैं? बाबा हमारे साथ है, यह स्मृति जरूर हो। खुद भगवान ने ऑफर किया है, मैं तुम्हारे साथ भी हूँ, साथी भी हूँ, सारथी भी हूँ। तो क्यों नहीं हम फायदा उठायें? ट्रस्टी होके रहो तो फायदा होवे। प्रवृत्ति में रहो लेकिन पर वृत्ति में रहो, यह भूल जाते हैं तो गृहस्थी बन जाते हैं। इसलिए जो बाबा के डायरेक्शन मिलते हैं उस पर चलते चलो फिर माया से घबरायेंगे नहीं। कोई-न-कोई शक्ति की कमजोरी आती है तो माया आती है। हम ही माया को आह्वान करते हैं। कमजोरी आना माना माया का आह्वान करना। तो क्या बनना है? नम्बरवन। कभी हिम्मत नहीं हारना तो बाबा की मदद सौ गुणा मिलती रहेगी।

मानो कभी माया का वार हो जाता है तो दिलशिकस्त भी कभी नहीं होना। बाबा साथ है, इस स्मृति से हिम्मत लाना क्योंकि दिलशिकस्त हुए तो गये। हमारा भाग्य नहीं है, हमें इतना साल हो गया है, मेरे में परिवर्तन आया नहीं... यह संकल्प माया देती है अपना बनाने के लिए। ''बाबा मेरा है'' तो मेरे ऊपर तो अधिकार है, उस समय बाबा के पीछे ही पड़ जाओ कि बाबा आपको मदद देनी ही है क्योंकि मेरा बाबा है। तो बाबा पर अपनेपन का अधिकार रखो तो नशा चढ़ेगा। रूहानी नशा रखो। मैं आत्मा, मेरा बाबा। फिर माया के आने का दरवाज़ा ही बन्द। आयेगी ही नहीं। तो नम्बरवन बनना ही है यह पक्का। तो बाबा को याद करेंगे तो नशा चढ़ेगा। अच्छा।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

"सहनशीलता - ज्ञानी तू आत्मा का मुख्य लक्षण है"
(विशेष कुमारियों के प्रति)

बाबा हम बच्चों को यह बहुत बड़ा लेसन देते कि हे बच्चे इस ज्ञान की मंजिल पर चलेंगे तो सहन करने की शक्ति धारण करनी पड़ेगी। सहनशील बनने की थोड़ी तकलीफ लेनी पड़ेगी। यह सहनशीलता का गुण बहुत बड़ी शक्ति है, यह सर्व गुणों में महान गुण है। यह बाबा का बोल सुन सब प्रैक्टिकल चार्ट देखें कि मेरे में सहनशीलता का गुण वा शक्ति है?

बाबा ने कहा बच्चे दु:ख-सुख, स्तुति-निंदा, मान-अपमान सबमें समान रहने की, एकरस स्थिति में रहने की, सहनशील होने की शक्ति चाहिए। तो यह शक्ति चाहिए या मुझ आत्मा का अथवा इस ज्ञान का पहला-पहला गुण ही यह है? ज्ञानी तू आत्मा का गुण है - समान रहना। अगर ज्ञानी तू आत्मा में यह गुण नहीं तो वह प्रिय नहीं। जब हम अपने को ज्ञानी तू आत्मा कहते माना हमारे अन्दर ड्रामा की सारी नॉलेज है। हर आत्मा के सतोप्रधान, सतो, रजो, तमो की स्टेजेस की भी नॉलेज है। जब नॉलेज है तो नॉलेज की शक्ति के आधार पर समान रहने की शक्ति स्वत: ही आ जाती है।

जैसे बाल से युवा, युवा से वृद्ध होते तो कभी यह नहीं कहते कि ओ नेचर तूने बाल से युवा वा युवा से बूढ़ा क्यों बनाया? परन्तु जानते हैं यह प्रकृति का नियम है। चार ऋतुयें होना यह भी प्रकृति का नियम है। जब हम जानते हैं कि यह नियम है, तो हम क्यों कहें ओ प्रकृति तुम हमें ठण्डी में वा गर्मी में दु:ख क्यों देती! हम जानते हैं यह नेचर का गुण है। सर्दी के समय सर्दी, गर्मी के समय गर्मी होनी ही है। हमारे पास उससे बचने के साधन हैं तो उसे यूज़ करें। हम जान गये अभी की प्रकृति है ही तमोप्रधान। सतयुग में प्रकृति सतोप्रधान है इसलिए सुखदाई है। अभी तमोप्रधान है इसलिए प्रकृति पर कभी गुस्सा नहीं आता। कभी भी हम ऐसे नहीं लड़ते - ए सर्दी तू मुझे दु:ख क्यों देती? किससे लड़ेगे? जब बुद्धि में आता यह तो प्रकृति का धर्म है तो उससे लड़ने नहीं जाते। फिर जब कहते क्या करें यह पारिवारिक परिस्थितियां आती हैं। वह तो आयेंगी ही। मैं उससे दु:खी क्यों हूँ! जैसे

प्रकृति का दु:ख सुख सहन करते, वैसे यह परिवार का भी तो हिसाब-किताब है। मै उसमें क्यों लडूं! हमें उसमें अपनी स्थिति अप-डाउन नहीं करनी है।

कभी-कभी सोचते मुझे तो सबसे मान मिलना चाहिए। ये मुझे मान नहीं देता इसलिए गुस्सा आता। लेकिन जब प्रकृति दु:ख देती तो गुस्सा क्यों नहीं आता। जब मेरा कोई अपमान करता तो मैं रंज होती लेकिन मैं सोचूं कि मैने उसे कितना मान दिया है। एक है देना, एक है लेना। जब अपमान पर गुस्सा आता माना मैं मान की भूखी, प्यासी हूँ। मान की मांग है। मैं दाता बनूं या लेवता बनूं? मुझे मान देना है या लेना है? मैं वरदाता हूँ या आत्माओं से वर लेने वाली हूँ? मान मांगना अर्थात् आत्माओं से वर मांगना। बाबा कहता मांगने से मरना भला... मैं दाता की बच्ची दाता हूँ तो लेवता क्यों बनते! यह सवाल हरेक अपने से पूछे।

कहा जाता तू प्यार करो तो सब करें। कहते मैं तो सबको प्यार देता लेकिन आगे वाला मुझे ठुकराता। इसमें हमेशा समझो यह मेरा हिसाब-किताब है। 63 जन्मों का हिसाब-किताब चुक्तू करना है। जहाँ प्यार होगा वहाँ सब मान देंगे। शुभ भावना रहेगी, शुभ चिन्तन चलेगा फिर उनके लिए मेरा वरदान रहेगा। अगर मैं इस स्थिति पर रहूंगी तो सब मेरी स्तुति करेंगे। अगर मैं ही अपनी स्थिति पर नहीं रहती तो कोई मेरी क्या स्तुति करेगा।

हरेक अपने से पूछो - पहले मेरी स्तुति मेरे 10 मंत्री (कर्मेन्द्रियां) करते? जो मुझ आत्मा का संस्कार है वह संस्कार मेरी स्तुति करता? जब मेरा संस्कार मेरी स्तुति करे अर्थात् आर्डर में रहे तब दूसरे भी स्तुति करेंगे। बाबा ने कहा 3 मंत्री हैं मुख्य। मन, बुद्धि और संस्कार। तो मेरा मन सदा मेरे चरणों में रहता अर्थात् मैं जो पवित्र आत्मा हूँ, मेरा मन सदा ऐसा ही स्वच्छ पवित्र और सदा ऊंचा रहता? मेरा पहला मंत्री मेरे आर्डर में है? आर्डर में है तो शुद्ध संकल्प स्वत: रहेंगे। फिर यह क्यों आता मेरा यहाँ अपमान हुआ? यह संकल्प उठाना भी तो अशुद्धता है। अपने से पूछो मैं अपनी महानता की ऊंची स्थिति पर रहता/रहती हूँ? जब मैं उसी स्थिति पर रहूँगी तब सभी मेरा मान करेंगे। कई कहते हैं मेरी वृत्ति अच्छी नहीं, मेरी वृत्ति चंचल होती है, अगर मैं यही रिपोर्ट करती तो मैं दूसरे से क्या मान माँगू। पहले तो अपनी रिपोर्ट बन्द करो। तू पहले अपने मन्त्री से तो प्यार पाओ, पीछे दूसरे से मांगो। अगर वृत्ति चंचल है माना मन्त्री कन्ट्रोल में नहीं है।

कहते हैं दक्ष प्रजापिता ने यज्ञ रचा। अब दस शीश वाले रावण को स्वाहा करने के लिए हमारे बाबा ने यह रुद्र यज्ञ रचा है। इसमें ब्रह्मा बाप के साथ ब्राह्मण बच्चों ने अपना सब कुछ स्वाहा कर दिया। तो हरेक पूछे मैने अपने दस राक्षसों को स्वाहा किया है? इन्द्रिय जीत बनने का मतलब है अपनी कर्मेन्द्रियों को दिव्य बनाना। तो चेक करो कि मेरे कान दिव्य बने हैं? या अभी तक कनरस सुनने का शौक है? परचिन्तन पतन की ओर ले जायेगा। फिर ऐसा परचिन्तन वाला मान पा सकता है? हमारे यह नयन दूसरे को प्यार की भावना से, भाई-भाई की दृष्टि से, बाबा के रत्न देखने के लिए हैं, अगर यह नयन बुरी दृष्टि से देखते, द्वेष की दृष्टि से देखते तो क्या यह नयन मुझे मान देंगे! अगर नयनों ने बुरी नज़र से देखा, द्वेष दृष्टि डाली तो मेरे नयन ही मुझे अपमानित करते। दु:ख देते फिर दूसरे से मान कैसे मिलेगा।

कहते यह मुझे इतना प्यार नहीं देता। मैं पूछती तुमने अपने को कितना प्यार किया? मैं अपने संकल्प को शुद्ध रखूंगी तो प्यार मिलेगा। मेरी बुद्धि अगर परचिन्तन में घूमती, सत्यता को छोड़, स्वच्छता को छोड़ असत्यता की ओर जा रही है तो पहले मेरी बुद्धि ने ही मुझे प्यार नहीं दिया। अगर बुद्धि ही प्यार नहीं करती तो दूसरे क्या करेंगे! पहले देखो - मेरे संस्कार मुझे रिस्पेक्ट देते हैं? मैंने अपने संस्कारों की चंचलता को स्वाहा किया है? अगर मेरे संस्कार ही मुझे रिस्पेक्ट नहीं देते तो दूसरे क्या देंगे!

जिसमें जरा भी मूड आफ की आदत है, उसे मान मिल नहीं सकता। मूड आफ माना आफ। उसे कौन सी प्रेम की आफर मिलेगी! उसे कौन आफरीन देगा? अगर कहते आफ होने की आदत है, तो आदत शब्द ही बुरा है। दिव्यता माना गुण। मेरा गुण है, दिव्य रहना। जहाँ दिव्यता है वहाँ मान अपमान का सवाल समाप्त हो जाता। जहाँ मांगते हो कि मान मिले, वहाँ वह दूर हो जाता है। आज के राजनेतायें मान के लिए चेयर मांगते, आज मिलती कल चेयर उठाकर फेंक देते क्योंकि है ही प्रजातन्त्र। हम तो राजाओं के राजा हैं, हम कभी मांग नहीं सकते। राजा कभी नहीं कह सकता कि यह चपरासी मेरी इज्जत गंवाता है। राजा का तो आर्डर चलता। तो पूछो मैं राज्य-अधिकारी हूँ या मैं अपने चपरासियों के अधीन हूँ?

कई कहते हैं क्या करूं - गुस्से में हाथ चल गया। अरे चल गया या तूने चलाया? कहते हैं न चाहते भी गाली निकल गई। अरे मुख किसका गंदा हुआ! जिसने गाली दी उसका मुख बासी हुआ। तू बासी मुख वाले को मुंह क्यों देते! तुम उनसे मुख मोड़ लो। तुम उनके साथ गंदा क्यों बनते हो!

दिलाराम बाप के दिलाराम बच्चे बनो। बाबा ने तो कहा है तुम शरीर निर्वाह के लिए कर्म करो। बाकी बाबा ने चित्र देखने की, नाविल्स पढ़ने की छुट्टी कभी नहीं दी। कहते हैं दिल उदास होती तो पढ़ लेता हूँ। पढ़ोगे, देखोगे तो जरूर वह बुद्धि को डिस्टर्ब करेगा। जब पहले जन्म से मर गये फिर वह पहली बातें क्यों याद करते, मरते क्यों नहीं?